अध्याय-1

परिवार

(Family)

परिवार सामाजिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ है, जिसका व्यक्ति के जीवन में प्राथमिक महत्व है। इसकी महत्ता का बोध **काम्ट** के इस कथन से स्पष्ट होता है कि **परिवार समाजशास्त्र विषय की अध्ययन इकाई हैं। सिडनी ए. गोल्डस्टोन** का कहना है कि "परिवार वह झूला है जिसमें भविष्य का जन्म होता है और वह शिशुगृह है जिसमें नये प्रजातंत्र का जन्म होता है।" **चार्ल्स कूले** परिवार की मानव जीवन की पोषिका मानते है। **कॉम्ट** परिवार को समाज की इकाई या कोशिका कहते हैं।*

परिवार सामाजिक संगठन की एक सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक निर्माणक इकाई है। परिवार के द्वारा ही सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण होता है, जो समाजशास्त्र की मूल विषय वस्तु है। मानव में सदैव जीवित रहने की इच्छा होती है जिसे परिवार द्वारा वह पूरा करता है। **मैलिनोवस्की** (Sex and Repression in savage society)* कहते हैं कि "परिवार ही एक ऐसा समूह है जिसे मनुष्य पशु अवस्था से अपने साथ लाया है।"

एल्मर अपनी पुस्तक 'Sociology of Family' में लिखते हैं कि 'Family' शब्द का उद्गम लैटिन शब्द 'Famulus' से हुआ है जो एक ऐसे समूह के लिये प्रयुक्त हुआ है जिसमें माता-पिता, बच्चे, नौकर व दास हों।'

परिवार एक ऐसी संस्था है जिसकी परिभाषा ऐसी नहीं दी जा सकती है जो सभी देश, कालों के परिवारों के लिये सही हो। इसका मुख्य कारण यह है कि परिवार के रूप एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में बदलते रहते हैं। कहीं पर एक विवाह प्रथा मान्य है तो कहीं पर बहु विवाह। एक विवाह और बहु विवाह का प्रभाव परिवार पर पड़ता है। इन्हीं सब बातों को दृष्टि में रखते हुए **डनलप महोदय** ने कहा कि परिवार की कोई सार्वभौमिक परिभाषा नहीं दी जा सकती है। परिवार की हम एक 'Arbitrary' परिभाषा ही कर सकते हैं।

परिवार का अर्थ : साधारणतया परिवार को एक ऐसे समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें पति, पत्नी और उनके बच्चे पाये जाते हैं तथा जिसमें इन बच्चों की देखरेख तथा पति-पत्नी के अधिकार व कर्त्तव्यों का समावेश होता है।

(i) **मैकाइवर व पेज** (Society)—"परिवार पर्याप्त निश्चित यौन संबंध द्वारा परिभाषित एक ऐसा समूह है जो बच्चों के जनन एवं लालन-पालन की व्यवस्था करता है।"

इस प्रकार **मैकाइवर व पेज** परिवार के समिति गत स्वरूप का उल्लेख करते हुए तीन प्रकार्यों या उद्देश्यों को प्रमुख मानते हैं—*

1. **यौन संबंधी प्रकार्य**
2. **प्रजनन संबंधी प्रकार्य, तथा**
3. **पालन-पोषण संबंधी प्रकार्य** (आर्थिक प्रकार्य)

(ii) **लूरीमेयर** के अनुसार, "परिवार एक गार्हस्थ समूह है जिसमें माता-पिता और संतान साथ-साथ रहते हैं। इसके मूल में दंपत्ति और उसकी संतान रहती है।"

(iii) **किंग्सले डेविस** के अनुसार, "परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जिसमें सगोत्रता के संबंध होते हैं और जो इस प्रकार एक-दूसरे के संबंधी होते हैं।"

(iv) **बर्गेस व लॉक** (The Family, 1945) के अनुसार, "परिवार व्यक्तियों के उस समूह का नाम है जिसमें वे विवाह, रक्त या दत्तक संबंध से संबंधित होकर एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं, एवं एक दूसरे पर स्त्री-पुरुष, माता-पिता, पुत्र-पुत्री, भाई-बहन इत्यादि के रूप में प्रभाव डालते व अंतःक्रिया करते हुए एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं।"

Scanned with CamScanner

बर्गेस एवं लॉक ने परिवार के सभी पहलुओं की ओर संकेत करते हुए परिवार के अंतर्गत दत्तक संबंधियों को भी सम्मिलित किया है। मनुष्य संतान चाहता है लेकिन जब संतान नहीं होती है तो किसी को गोद ले लेता है जो उसी परिवार का माना जाता है। हिन्दू संस्कृति एवं कानून में भी इसी मान्यता को स्वीकार किया गया है।

(v) **इलियट एवं मैरिल** (Social Disorganization) के शब्दों में, "परिवार पति-पत्नी एवं बच्चों से निर्मित एक जैविक-सामाजिक इकाई है।"

(vi) **क्लेयर** के अनुसार, "परिवार से हम संबंधों की वह व्यवस्था समझते हैं जो माता-पिता और उनकी संतानों के बीच पाया जाता है।"

(vii) **बीसंज एवं बीसंज** (Modern Society) के शब्दों में, "परिवार की परिभाषा एक दृष्टिकोण से की जा सकती है कि एक स्त्री, बच्चे सहित तथा एक पुरुष उनकी देखरेख हेतु।"

(viii) **निमकॉफ** के अनुसार, "परिवार पति-पत्नी, बच्चों सहित या उनके बिना अथवा मनुष्य अथवा स्त्री अकेले का बच्चों सहित कम या अधिक स्थिर समिति है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि परिवार जैविकीय संबंधों पर आधारित एक सामाजिक समूह है जिसमें माता-पिता और उनकी संतानें होती हैं तथा जिसका उद्देश्य अपने सदस्यों के लिये भोजन, प्रजनन, यौन सन्तुष्टि समाजीकरण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करना है।

इस प्रकार परिवार के निम्नलिखित पाँच तत्वों का उल्लेख किया जा सकता है—

- **स्त्री-पुरुष का यौन सम्बन्ध** (Mating Relationship)
- **यौन संबंधों को विधिपूर्वक स्वीकार किया जाता है।** (विवाह संस्कार) (Some form of marriage)
- **संतानों की वंश व्यवस्था** (Reckoning of descent)
- **संतानों का भरण-पोषण** (Child-rearing)
- **सह निवास** (Common habitation)

मैकाइवर व पेज अपनी पुस्तक 'Society' में परिवार की कुछ विशिष्ट विशेषताओं का उल्लेख करते हैं—

(क) **सार्वभौमिकता** (Universality)—परिवार एक सार्वभौमिक इकाई है। परिवार हर समाज, हर काल, देश व परिस्थिति में पाये जाते हैं, चाहे इनका स्वरूप कुछ भी हो। समाज का इतिहास ही परिवार का इतिहास रहा है क्योंकि जब से मानव का जन्म इस धरती पर हुआ है तभी से परिवार रहा है। चाहे पहले उसका स्वरूप भले ही कुछ रहा हो।

(ख) **भावात्मक आधार** (Emotional Basis)—परिवार का आधार व्यक्ति की वे भावनाएं हैं जिनकी पूर्ति के लिये उसने परिवार का निर्माण किया है, जैसे राग, वात्सल्य, यौन, सहयोग, सहानुभूति इत्यादि।

(ग) **सृजनात्मक प्रभाव** (Formative Influence)—व्यक्ति परिवार में ही जन्म लेता है और परिवार में ही उसकी मृत्यु हो जाती है। इसलिए परिवार व्यक्ति पर रचनात्मक प्रभाव डालता है। जिस प्रकार का परिवार होगा उसी प्रकार व्यक्तियों के विचार व दृष्टिकोण निर्मित होंगे। मिट्टी के बर्तन के समान बच्चों के भविष्य का निर्माण परिवार में ही होता है।

(घ) **सीमित आकार** (Limited Size)—चूँकि परिवार के अंतर्गत केवल वे ही व्यक्ति आते हैं जो वास्तविक या काल्पनिक रक्त संबंध से होते हैं इसलिए अन्य संगठनों की अपेक्षा इसका आकार सीमित होता है। किसी भी परिवार में दो-चार सौ सदस्य नहीं होते, क्योंकि जैसे बच्चे बड़े होते गये उनका विवाह होता गया, फलस्वरूप उन्होंने अलग परिवार बसाना प्रारंभ किया, इस तरह से परिवार का आकार सीमित होता जाता है। आज संतति निरोध द्वारा पारिवारिक आकार को और सीमित बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

(ङ) **सामाजिक संरचना में केन्द्रीय स्थिति** (Nuclear position in the Social Structure)—परिवार सामाजिक संरचना का केन्द्र बिन्दु है। जिसके आधार पर समाज की अन्य समस्त इकाइयों व सामाजिक संबंधों का निर्माण होता है। परिवार के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। समाज का छोटा रूप परिवार और परिवार

Scanned with CamScanner

का विस्तृत रूप समाज है। इसीलिए **अरस्तू** ने लिखा है कि, "समुदाय परिवारों का ही योग है।"

(च) सदस्यों का उत्तरदायित्व (Responsibility of Individuals)—चूंकि परिवार का आकार सीमित है लेकिन इसके सदस्यों का उत्तरदायित्व असीमित होता है। जबकि अन्य संगठन कृत्रिम है इसलिये उनके सदस्यों की जिम्मेदारी सीमित है। प्राथमिक समूह होने के नाते परिवार में इसके सदस्यों की जिम्मेदारी और कार्य बढ़ जाते हैं। परिवार में व्यक्ति को हर कार्य अपना समझकर करना पड़ता है।

(छ) सामाजिक नियंत्रण (Social Control)—परिवार सामाजिक नियंत्रण की एक उचित **विधि** है। परिवार प्राथमिक समूह है, इस कारण परिवार व्यक्ति के व्यवहारों पर प्रत्यक्ष नियंत्रण रखता है। परिवार सामाजिक नियंत्रण की **अनौपचारिक साधन*** है जिसके द्वारा व्यक्ति वास्तविक रूप से नियंत्रित रहते हैं। हिन्दू शास्त्रों में लिखा है—मातृमान, पितृमान, आचार्यवान, पुरुषोवद अर्थात मनुष्य वही बनता है जो उसके माता-पिता और अध्यापक बनाते हैं।

(ज) परिवार की अस्थायी एवं स्थायी प्रकृति (Temporary and Permanent Nature)—परिवार की प्रकृति अस्थायी एवं स्थायी दोनों है। परिवार स्त्री-पुरुष का एक संगठन है। अगर परिवार को हम एक समिति के रूप में लेते हैं तो इसकी प्रकृति अस्थायी है, क्योंकि जैसे ही परिवार का कोई सदस्य अलग हुआ या उसकी मृत्यु हो गयी तो समिति नष्ट हो गयी। लेकिन इसके बावजूद भी परिवार स्थायी है क्योंकि परिवार एक संस्था है जो कृत्रिम नहीं बल्कि वास्तविक है, जिनका आधार मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियां है जो कभी नष्ट नहीं होती, इसलिए परिवार भी कभी नष्ट न होने वाली संस्था है।

संस्था के रूप में परिवार की अपूर्व विशेषताएं

समस्त सामाजिक संस्थाओं में परिवार सबसे अधिक आधारभूत और सार्वभौमिक है। यद्यपि इस सामाजिक संस्था में देश और काल के अनुसार अत्यन्त विभिन्नता पायी जाती हैं, फिर भी इसमें कुछ सर्वव्यापी विशेषताएं भी हैं। **चैपिन** ने परिवार संस्था के चार पहलुओं का वर्णन किया है—

- **मनोवृत्तियाँ और व्यवहार प्रतिमान** (Attitudes and Behaviour)
- **प्रतीकात्मक सांस्कृतिक लक्षण** (Symbolic Cultural Traits)
- **उपयोगितापूर्ण सांस्कृतिक लक्षण** (Utilitarian Cultural Traits)
- **मौखिक एवं लिखित निश्चित नियम** (Oral and written specification)

मेरिल तथा एल्डरिज परिवार संस्था की निम्नलिखित विशेषताएं बताते हैं—

- **सार्वभौमिकता** (Universality)
- **संवेगात्मक** (Emotionality)
- **प्राथमिकता** (Priority)
- **उत्तरदायित्व** (Responsibility)
- **छोटा आकार** (Small size)

परिवार की उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धांत

परिवार की उत्पत्ति कब, कैसे व किन अवस्थाओं से हुई है, मानव शास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों व समाजशास्त्रियों में विचारों की काफी विभिन्नता है तथा जिसके कारण ही परिवार की उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धांत पाये जाते हैं। इनका संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार से किया जा रहा है—

(1) यौन साम्यवाद का सिद्धांत (Theory of Sex Communism)—मार्गन, फ्रेजर, ब्रिफाल्ट इत्यादि कुछ मानवशास्त्रियों का कहना है कि समाज के विकास की प्रारंभिक अवस्था में परिवार एवं विवाह जैसी कोई संस्था नहीं थी। जो जिससे चाहे यौन संबंध स्थापित कर सकता था। स्त्री-पुरुष के संबंध का बिल्कुल अभाव था कुछ जनजातियों में अभी भी ऐसी व्यवस्था देखने को मिलती है जिसमें अक्सर अतिथि के सत्कार हेतु पत्नी तक को भेंट किया जाता है। इस प्रकार इस सिद्धांत के अनुसार प्रारंभिक समाज में यौन साम्यवाद की स्थिति पायी जाती थी।

(2) पितृसत्तात्मक या शास्त्रीय सिद्धांत

*विविध प्रारंभिक परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नोत्तर के संकेतक

Scanned with CamScanner